ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(3): 46-48
www.allresearchjournal.com
Received: 26-01-2023
Accepted: 28-02-2023

शगुफ़्ता निगार
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, ल. ना. मि. वि. वि., दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. शाहिद हसन
सहायक प्राध्यापक, डॉ. जाकिर हुसैन षिक्षक प्रषिक्षण, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
शगुफ़्ता निगार
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, ल. ना. मि. वि. वि, दरभंगा, बिहार, भारत

राजाराम मोहन राय और सर सैय्यद अहमद खान के शैक्षिक चिंतन का विष्लेषणात्मक अध्ययन

शगुफ़्ता निगार, डॉ. शाहिद हसन

सारांश
शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जिसका मूल आधार मनुष्यों को जीवन्त बनाना एवं व्यवहारिक अवधारणाओं के साथ चिंतन, मनन करना सीखाता है। हर दौर में विद्वानों ने अपने मतों को शैक्षिक आयाम दिये है एवं उनका लाभ जनसाधारण को हुआ है। उन्हीं विद्वानों में राजा राममोहन राय और सर सैय्यद अहमद खाँ भारत के दो सबसे बड़े सामाजिक और धार्मिक सुधारक हुए है। यह एक सुखद संयोग है कि दोनों एक दूसरे के समकालीन थे। दोनों के चिंतन में समाज के प्रति एक अलग प्रकार की सोच थी, जो जाहिर करती थी कि समाज का निर्माण बगैर शिक्षा के सम्पन्न नही किया जा सकता है, क्योंकि षिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास हेतु अति आवष्यक है। प्रस्तुत आलेख में दोनों विद्वानों द्वारा शैक्षिक आयामों के अंतर्गत शैक्षिक उद्दश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षक–शिक्षार्थी का आलोचनात्मक चिंतन को रेखांकित करने की चेष्टा की गई है।

कूटशब्दः दर्शन, शिक्षा, छात्र, अध्यापक, पाठ्यक्रम, व्यवहारिकता

प्रस्तावना

भारत प्राचीनकाल से महान ऋषि–मुनियों, विद्वानों, समाज सुधारकों, धार्मिक नेताओं, शिक्षाशास्त्रियों आदि का देश रहा है। जिन्होंने अपने विचारों, कार्यों एवं रचनाओं के द्वारा भारत का ललाट ऊँचा किया है। साथ ही सत्यं, शुवं, सुन्दरम् का आदर्श प्रस्तुत कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उपदेश देकर संपूर्ण विश्व को अमर ज्योति से प्रकाशित किया है।

17वीं एवं 18वीं शताब्दी में राजा राममोहन राय और सर सैय्यद अहमद खाँ का स्थान चिंतक, विचारक, सुधारक के रूप में सर्वोपरि माना जायेगा। राजा राममोहन राय (1772–1833) और सर सैय्यद अहमद खाँ (1817–1898) के काल अर्थात् लगभग दो सदियों की सोच का आकलन आज के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक मालूम पड़ता है। दोनों विद्वानों ने शिक्षा की ललक मूल रूप से प्रत्येक व्यक्तियों में विस्थापित करना चाहते थे और उनका मानना था कि शिक्षा में सुधार आत्मबोध से होगा। अर्थात् पुर्नजागरण, समझ, समन्वय एवं नैतिक मूल्यों की प्राप्ति से इसे पाया जा सकता है। वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा सभी स्तरों के शिक्षा में लागये गये सुधार हेतु जो महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा स्थापित की गयी है, वैसे विचार तब से हमें विकसित होने के लिए उद्वेलित करते रहे है।

दोनों विचारक एक तरफ अंग्रेजी सीखने पर बल देते है, साथ ही मातृभाषा के साथ–साथ स्थानीय भाषा से भी पूर्ण रूप से प्रेम रखते है। यहाँ तक उन्होंने मातृभाषा की उपयुक्ता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाये रखने की हिमायती है। दोनों का मानना रहा है कि व्यक्ति के उत्थान में बौद्धिक क्षमता का विकास, उदारवादी, प्रगतिशील और सम्यक अवयव से ही होगा और ऐसे विचार बिना मातृभाषा के संभव नहीं है। वर्त्तमान आधुनिक काल में इन दोनों चिंतकों के विचारों में शिक्षा सबों के लिए सर्वमान्य हो, रूढ़िवादिता का अंत हो, अंधविश्वास समाप्त हो, प्रौद्योगिकी का विकास हो, सम्प्रेषण हेतु अंग्रेजी शिक्षा अपनायी जाए। स्त्री शिक्षा में किसी भी प्रकार का भेद न हो, शिक्षा जागरण के लिए हो। किसी भी रूप में मातृभाषा की अवनति न हो, पाठ्यक्रम को प्रान्तीयता के अंतर्गत निर्मित किया जाय ताकि संस्कृति, सभ्यता और सत्यता का लोप न हो। समानता एवं समता की उक्ति स्वतंत्र रूप से निर्धारित हो, आदि जैसे विचार आधुनिकता को प्रबलता प्रदान करते है। वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीय षिक्षा नीति–2020 में सुझाये गये सारे सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्षों का अवलोकन इन दोनों महानुभावों के विचारों में मुख्य रूप से प्रतीत होता है जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूर्ण रूप से शिक्षा की स्थिति को शक्तिशाली बनाने वाले होंगे।

राजा राममोहन राय एवं सर सैय्यद अहमद खाँ का शिक्षा दर्शन

राजा राममोहन राय का दार्शनिक पक्ष अत्यन्त विस्तृत एवं विविधतापूर्ण है। जन्म से ही उनमें मानव प्रेम की भावना थी जो कि एक संस्कार युक्त धार्मिक जीवन जीने के साथ–साथ बलवती होती गयी। जैसे–जैसे वे बड़े हुए विद्यार्जन किया तथा अन्य धर्मों के बारे में जाना व समाज व सामाजिक जीवन को देखा, सुना, अनुभव किया तब से उन्होंने मानवीय पहलुओं के अनुरूप सकारात्मक अथवा नकारात्मक पक्षों परिभाषित करने लगे। यही से उनके नवजागरण काल का शुभारम्भ हुआ। उन्होंने रूढ़िवादिता का जन्म से ही विरोध किया, उनमें परोपकार की भावना कूट–कूटकर भरी हुई थी।

राजा राममोहन राय ने किसी दार्शनिक मत को प्रतिपादित न कर, जिस किसी भी दार्शनिक एवं आध्यात्मिक ग्रन्थ का अध्ययन किया, उसी के आधार पर चिन्तन कर समाजोपयोगी व्याख्या प्रस्तुत की। राजा राममोहन राय ने जीवन को इतने नजदीक एवं व्यापक रूप में देखा कि जीवन का कोई भी पक्ष उनके चिन्तन से अछूता नहीं रहा। मानव जीवन के कल्याण के लिए उन्होंने अनेक कार्य किए उन्हीं कार्यों ने उन्हें साधारण मनुष्य से सन्त बना दिया। राजा राममोहन राय का जीवन का अनुपम उदाहरण है, ''उदारचरितानातु वसुधैव कुटुम्बकं'' राजा राममोहन राय जी का मानना था कि मनुष्य को धार्मिक विश्वासों का अपने विवेक से विश्लेषण कर अंधविश्वासों से दूर रहना चाहिए। उनका मानना था कि अंधविश्वास अज्ञानता से पैदा होता है। वे चमत्कारों में विश्वास नहीं करते थे, इसलिये उनके जीवन और चिंतन से दार्शनिक पक्ष को अलग नहीं किया जा सकता है। राजा राममोहन राय का अध्ययन क्षेत्र सभी धर्मों के मुख्य ग्रन्थों के अतिरिक्त आलोचनात्मक चिंतन में भी था। वे इन सबके संकुचित भावों से परे विशुद्ध एकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि ''एक ईश्वर की उपासना करना और जीवमात्र का कल्याण करना'' यही वास्तविक धर्म है। यही राजा राममोहन राय का सिद्धान्त था। उन्होंने हिंदू समाज में ब्रह्म ज्ञान के प्रचार के लिए हिंदू शास्त्र का सहारा लिया और ईसाई समाज में ईसाई शास्त्र का। राजा राममोहन राय जी वेदान्त धर्म को मानते थे और वह पूर्णरूप से अद्वैतवादी थे, इसी के आधार पर उन्होंने ब्रह्मसमाज की स्थापना की।

सर सैय्यद ने इस बात को स्वीकार किया कि छात्रों को परम्परागत एवं आधुनिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। अतः शिक्षक को भी प्राचीन एवं नवीन गुणों का सम्मिश्रण होना चाहिए।

सर सैय्यद शिक्षार्थी के रूप में एक सभ्य, सुसंस्कृत, आज्ञाकारी, अनुशासित एवं शीलनता से परिपूर्ण छात्र की कल्पना करते थे। सर सैय्यद का मानना था कि शिक्षार्थियों को प्रशिक्षण अवश्य देना चाहिए। भले ही उनकी शिक्षा कम हो, परन्तु उनमें संस्कारों की कमी न रहे। सर सैय्यद ने कहा कि ''बोलने में तो यूँ आता है कि शिक्षा और प्रशिक्षण परन्तु मेरी समझ में प्रशिक्षण शिक्षा पर प्रधान है।

सर सैय्यद के अनुसार ईश्वर के नियम अपरिवर्तनीय है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है और वह शक्ति रखता है। प्रतयेक उस नियम को बनाने की जिसे वह पसंद करता है। यदि एक बार वह नियम बन जाते हैं तो उसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता। ईश्वर निराकर (शरीर विहीन) है और ईश्वर हर स्थान पर हर समय उपस्थित है। ईश्वर समय अथवा स्थान द्वारा सीमित नहीं है और मृत्यु के पश्चात् मनुष्य (मुस्लिम वर्ग) उसे परलोक में दखेंगे। परन्तु यह दर्शन भौतिक कार्य नही होगा, वरन् यह दर्शन आध्यात्मिक होगा। ईश्वर का उसकी सृष्टि के साथ संबंध के बारे में सर सैय्यद का विचार है कि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर द्वारा नियंत्रित है। जिस प्रकार एक घड़ी निर्माता घड़ी के भिन्न पुर्जों को आपस में संबंधित करता है, फिर उसे क्रियान्वित करता है, उसी प्रकार ईश्वर अपनी इच्छा के अनुसार संसार को बनाता है, फिर उसे नियंत्रित करता है।

राजा राममोहन राय और सर सैय्यद अहमद खाँ का शैक्षिक आधार

राजाराममोहन राय ने पृथक रूप से किसी दार्शनिक विचार/पंथ का प्रतिपादन नहीं किया वरन् विभिन्न दार्शनिक व आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन कर उनके समाजपयोगी तत्वों को विशिष्ट रूप में प्रस्तुत किया। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण इतना अधिक व्यापक व गहनता लिए हुए था कि उनके चिंतन में हम दर्शन की झलक पा सकते हैं। उनका मानना था कि मनुष्य को धर्म–आध्यात्म एवं परंपरागत रूढ़ियों का अंधानुकरण नहीं करना चाहिए वरन् सर्वप्रथम इनको तर्कसंगत–युक्तिसंगत दृष्टिकोण से परख लेना चाहिए। उनका मानना था कि अंधविश्वास अज्ञानता से पैदा होता है। जीव, जगत, परमात्मा, ज्ञान–विज्ञान एवं धार्मिक मूल्य, आचार–व्यवहार एवं मानवतावादी उनके विचारों से स्पष्ट है कि वे जीव को मात्र एक चेतन शक्ति मानते थे तथा 'जगत को क्रीड़ास्थल' मानते थे।

उनका मानना था कि धर्म प्राचीनकाल से भारतीय परम्पराओं से जुड़ा एक ऐसा शब्द है जो मानव को सच्चे आचरण के लिए प्रेरित करता है परन्तु धीरे–धीरे समाज में अंधविश्वास व रूढ़िवादिता ने जन्म ले लिया, उनके अनुसार, ''धर्म का दूसरा रूप कर्मकाण्ड का है। पूजा–पाठ, तंत्र–मंत्र, यज्ञ, संस्कार, जाति प्रथा, छूआछूत, नारियों के साथ दुर्व्यवहार ये सब कर्मकाण्ड के ही विकृत रूप हैं। इन्हीं के कारण प्रत्येक धर्म समय के साथ नष्ट हो जाता है।'' धर्म की इन अमानुषिक प्रवृत्तियों को दूर करने हेतु ही उन्होंने मूर्तिपूजा, सतीप्रथा, बलिप्रथा, बहुविवाह, शिशु हत्या, जाति–पाति के नियमों का विरोध किया तथा ईश्वर को एक अद्वैत सार्वभौमिक एकेश्वर के रूप में स्वीकारा। यह सार्वभौमिक दृष्टिकोण केवल दार्शनिक चिंतन मात्र नहीं था। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में धार्मिक विशिष्टवाद के उभरने से पहले तक इस सार्वभौमिक दृष्टिकोण ने राजनीतिक व सामाजिक चिंतन पर व्यापक प्रभाव डाला और वर्तमान आधुनिक संस्कृति को जन्म दिया।

सर सैय्यद एक बहुत बड़े शिक्षाशास्त्री, समाज सुधारक और साहित्यकार तो थे ही साथ ही, उच्च कोटि के दार्शनिक भी थे। सर सैय्यद ने ईश्वर, मनुष्य, धर्म और प्रकृति से संबंधित अपने विचारों को व्यक्त किया और इसके साथ मानव समाज के संभवतः प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने मत प्रकट किये है।

सर सैय्यद अहमद खाँ ने इस बात को स्वीकार किया कि शिक्षा व्यक्ति में परिवर्तन लाती है और उसके गुणों को प्रस्फुटित करती है। शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए सर सैय्यद कहते हैं, ''मनुष्य की आत्मा बिना शिक्षा के एक संगमरमर के चितकबरे टुकड़े के समान है जब तक संग ताराश उसमें हाथ नही लगाता है, उसका धुंधलापन और खुरदरापन दूर नही करता है, उसको पॉलिश और चमक से सुसज्जित नहीं करता है, उस समय तक उसके अंतर्निहित गुण परिलक्षित नहीं होते है। यही स्थिति मनुष्य की आत्मा की भी है। मनुष्य का हृदय कितना ही उदार क्यों न हो जब तक किस पर उत्कृष्ट शिक्षा का प्रभाव नहीं पड़ता, उस समय तक उसकी प्रत्येक अच्छाई और प्रतिभा जो उसमें निहित है उजागर नहीं हो सकती।''

राजा राममोहन राय एवं सर सैय्यद अहमद खाँ का छात्र–अध्यापक संबंध

राजा राममोहन राय के अनुसार शिक्षा में बालक का प्रमुख स्थान है, बालक में अनेक जन्मजात शक्तियाँ होती हैं, इन शक्तियों का विकास शिक्षक के सहयोग से किया जाना चाहिए। शिक्षक को बालक की रूचियों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करनी चाहिए ताकि

छात्र भविष्य में अपने उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकें। राजा राममोहन राय छात्र की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनका मानना था कि प्रत्येक बालक में ईश्वर प्रदत्त गुण विद्यमान होते हैं। शिक्षक को उसकी प्रकृति के अनुसार इन गुणों को विकसित कर बाहर प्रस्फुटित करने में सहयोग करना चाहिए। राजा राममोहन राय शिक्षक को एक ऐसे मार्गदर्शक के रूप में देखना चाहते थे जो बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक हो और बालक को ऐसा वातावरण प्रदान करे जिससे बालक अपनी मानसिक शक्तियों का पूर्ण विकास कर सकें। बालक के प्रकृति प्रदत्त गुणों के विकास हेतु वे संगीत, योग साधना, बालक की रूचि व ध्यान विधि द्वारा विकसित करने के प्रबल समर्थक थे। वे शिक्षक को एक ऐसे मार्गदर्शक व दार्शनिक के रूप में देखते थे जो छात्रों के साथ स्नेह व मैत्रीपूर्ण व्यवहार कायम रख सकें।

सर सैय्यद ने इस बात को स्वीकार किया कि छात्रों को परम्परागत एवं आधुनिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। अतः शिक्षक को भी प्राचीन एवं नवीन गुणों का सम्मिश्रण होना चाहिए।

सर सैय्यद शिक्षार्थी के रूप में एक सभ्य, सुसंस्कृत, आज्ञाकारी, अनुशासित एवं शीलनता से परिपूर्ण छात्र की कल्पना करते थे। सर सैय्यद का मानना था कि शिक्षार्थियों को प्रशिक्षण अवश्य देना चाहिए। भले ही उनकी शिक्षा कम हो पर उनमें संस्कारों की कमी न रहे। सर सैय्यद ने कहा कि ''बोलने में तो यूँ आता है कि शिक्षा और प्रशिक्षण परन्तु मेरी समझ में प्रशिक्षण शिक्षा पर प्रधान है।

सर सैय्यद के अनुसार शिक्षक को उच्च आदर्श एवं नैतिक विचारों से सम्पन्न होना चाहिए, क्योंकि शिक्षक के व्यवहार का प्रभाव छात्रों पर पड़ता है। शिक्षक ऐसा होना चाहिए, जिसके पद चिन्हों पर छात्र चल सकें।

सर सैय्यद ने कहा कि शिक्षक को चाहिए कि वह अपने छात्रों को इस प्रकार प्रभावित करें कि छात्र उच्च स्तर का चरित्र एवं सभ्यता प्राप्त करें। इस प्रकार शिक्षक को छात्रों के नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक गुणों के विकास में सहायक होना चाहिए। इसके अतिरिक्त वह छात्रों के मानसिक एवं शारीरिक गुणों के विकास में भी सहायक हो।

राजा राममोहन राय एवं सर सैय्यद के पाठ्यक्रम के संदर्भ में विचार

राजाराम मोहन का मानना था कि शिक्षण विधियां ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत बालक स्व प्रयास द्वारा स्वयं करके सीखें। इस प्रकार से किया गया अधिगम अथवा शिक्षण कार्य फलदायी होगा। ज्ञान स्थिर प्रगति का होगा तथा बालक में रटने की विधि का विकास नहीं होगा। उनका यह भी मानना था कि जो बालक को स्नेहपूर्ण समझायी जा सकती है, वह जोर जबरदस्ती से नहीं समझायी जा सकती। अतः अध्यापक को चाहिए कि वह बालक के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करके बालक को स्व अनुभव से स्व प्रयास द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो।

शिक्षा का प्रारूप पाठ्यक्रम पर आधरित होता है। पाठ्यक्रम के प्रमुख आधार व्यक्ति, समाज, दर्शन एवं अन्य विषय हैं। सामाजिक दृष्टिकोण, दार्शनिक विचारधारा एवं व्यक्तिगत मान्यताओं में परिवर्तन के साथ शिक्षा भी परिवर्तनशील है। परिवर्तन विकास की ओर ले जाता है, इसलिये शिक्षा के समुचित विकास हेतु उपयुक्त पाठ्यक्रम का विकास करना आवश्यक है। परन्तु वर्तमान में जो पाठ्यक्रम प्रचलन में हैं वह परम्परागत प्रकार का है। इस पाठ्यचर्या में एक ओर तो प्राविधिक एवं व्यवसायिक विषयों का अभाव है तथा दूसरी ओर इस पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों के वातावरण एवं वास्तविक एवं सामाजिक जीवन से कोई संबंध नहीं है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जो पाठ्यक्रम प्रतिस्थापित है उनमें राजाराम मोहन राय के विचारों एवं चिंता को स्पष्टतः देखा जा सकता है। अर्थात् कहा जा सकता है कि उनकी दूरदृष्टि कितनी प्रबल एवं व्यवहारिक थी।

सर सैय्यद का योगदान किसी एक ही क्षेत्र में नही है, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में है। लेकिन शिक्षा एक ऐसा सशक्त साधन है, जिससे देश और समाज का सुधार एक साथ हो जाता है। अतः हम उनके शैक्षिक योगदानों की समग्रता को इंगित करते हुए कह सकते है कि सर सैय्यद के विचार में सामाजिक विकास के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है, क्योंकि एक निरक्षर समाज कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। इतना ही नहीं, निरक्षरता, निर्धनता की जननी कही जाती है।

सर सैय्यद के पाठ्यक्रम में अंग्रेजी और फारसी भाषाओं के ज्ञान पर बहुत बल था। सर सैय्यद ने अरबी को एक ऐच्छिक विषय के रूप में स्वीकार किया। संस्कृत, ग्रीक और लैटिन तीनों में से किसी एक भाषा का ज्ञान प्राप्त करना शिक्षार्थी के लिए अनिवार्य समझते थे।

सर सैय्यद के अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो छात्रों के व्यक्तित्व का विकास कर सकें और इसके लिए वह सामान्य ज्ञान की शिक्षा पर बहुत बल देते है।

निष्कर्षतः स्पष्ट है कि राजाराम मोहन राय एवं सर सैय्यद अहमद खाँ के शैक्षिक विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जीवन के सभी क्षेत्रों को व्यवहारिक रूप प्रदान करते है। इन महानुभावों का चिंतन चिंतक के रूप में ही नही अपितु इंसानियत को प्रोत्साहित करने में जो पहल प्रदर्शित है वह राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एकता, समन्वय, बंधुत्वता, सह अस्तित्वता, मूल एवं नैतिकता, समता एवं समानता, धर्मनिरपेक्षता आदि जैसे महत्वपूर्ण विषयों को जनमानस के लिए शिक्षा के स्त्रोत के रूप में विद्यमान प्रतीत होती है। यह भी देखा जा रहा है कि 1964 के शिक्षा आयोग से लेकर वर्तमान में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तक इन विद्वानों के विचारों को प्राथमिकता प्राप्त है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजा राममोहन राय (2003), इरा ऑफ सोशियो इकोनॉमिक रिफार्म
2. राजा राममोहन राय (2012), ए क्रिटिकल बॉयोग्रॉफी
3. हक अब्दुल 'मातालाए सर सैयर' एजुकेशन बुक हाउस, अलीगढ़, पृ. 94
4. निजामी, के. ए. (1988), 'सैय्यद अहमद खाँ,' पब्लिकेशन डिविजन, मिनिस्ट्री, नई दिल्ली, पृ. 71
5. गिरिराज शंकर राय चौधारी एवं अरुणा (2011), राजा राममोहन राय, ए बायोग्राफी : ए न्यू अप्रोच।